01 / 10 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

एकान्त, एकाग्रता और द्रढ़ संकल्प से सिध्धि प्राप्त करने का अनुभव

➢➢ पवित्रता

➳_➳ मैं आत्मा ज्योति बिंदु मस्तकमणि

→ सम्पूर्ण पवित्र एक प्रकाशपुंज हूँ

- इन आँखों से देखने वाली
- कानो से सुनने वाली
- मुख से बोलने वाली
  - एक ज्योतिर्मय आत्मा हूँ

➳_➳ स्व स्वरुप में स्थित देह के भान से परे

→ मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा हूँ

- पवित्रता ही मेरा श्रृंगार है
- पवित्रता ही मेरा स्वधर्म है
- पवित्रता ही जीयदान है
- पवित्रता ही मेरा खजाना है

➳_➳ फरिश्ता स्वरुप धारण कर अब मैं आत्मा आकाश में उडती हूँ

→ मैं परम पवित्र फरिश्ता हूँ

- सूक्ष्म वतन में बापदादा के सन्मुख हूँ
  - बापदादा की द्रष्टि से
  - पवित्रता की किरणें मुझ आत्मा में समा रही है
  - बापदादा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है

➳_➳ पवित्रता के प्रकम्पन बाबा के हाथो से मुझ में समा रहे है

→ बापदादा स्वयम मुझे तिलक दे रहे है

- पवित्र भवः
- योगी भवः
  - बाबा ने अपना हाथ मेरे हाथो में दे दिया है

➳_➳ पवित्रता की उर्जा मुझमे समा रही है

→ मेरा सम्पूर्ण जीवन पवित्रता से भर गया है

- सम्पूर्ण पवित्रता का अनुभव हो रहा है

➢➢ एकान्तवासी, एकाग्रता और सिध्धि स्वरुप

➳_➳ सभी भक्त सिध्धि प्राप्त करने की कामना से मुझ देवी का विशेष आह्वान कर रहे है

→ स्वयं को सम्पूर्ण रीति से मुझ इष्ट देवी को समर्पित हो जाते है

■ सिध्धि को प्राप्त करने की दो मुख्य विधि मैं आत्मा अपना रही हूँ

 1..एकान्तवासी

 2..एकाग्रता

■ एकाग्रता कम होने की कारण ही दृढ निश्चय की कमी है

 तो अब से मैं आत्मा किसी भी परिस्थिति में अपने निश्चय को हिलने नहीं देती हूँ

 हर सेकंड अपनी सम्पूर्ण सर्व शक्ति सम्पन्न स्वरुप की

 स्मृति स्वरुप में ही रह्ती हूँ

 तभी सिध्धि भी प्रत्यक्ष रूप में मिलेगी

■ एकान्तवासी कम होने के कारण ही साधारण संकल्प बीज को कमजोर बना देता है

 तो प्रत्यक्ष फल प्राप्त करने के लिए

 मैं आत्मा संकल्प रूपी बीज को भी

 दृढ निश्चय रुपी जल से पावरफुल बना रही हूँ

 तभी सेकंड में असम्भव भी सम्भव प्रत्यक्ष फल के रूप में दिखाई देगा

 मैं आत्मा इस विधि को धारण करके ही सिध्धि स्वरुप बन रही हूँ

➢➢ मैं परम पवित्र आत्मा हूँ

➳_➳ अब मैं आत्मा अपने घर पवित्र धाम में पहुच गई हूँ

→ ब्रह्मलोक में, निराकारी दुनिया में

■ पवित्रता का सागर मेरे सन्मुख खड़ा है

· पवित्र किरणें मुझ आत्मा में समां रही है

➳_➳ मुक्तिधाम निर्वाण धाम मैं आत्मा निराकार

→ इस विचित्र धाम में

■ महा ज्योति की सम्पूर्ण पवित्र किरणें

· पवित्रता के सागर में मैं आत्मा समाती जा रही है

➳_➳ पवित्रता के सागर के अथाह सागर में

→ मैं आत्मा समा गई

■ कंबाइंड स्वरुप में स्थित हु

➳_➳ मैं आत्मा मध्यकाल में द्वापर युग में हूँ

→ मन्दिरों में मेरी पूजा हो रही है

■ मैं परम पवित्र इष्ट देवी हूँ

· असंख्य भक्त आँखों के सामने है

➳_➳ द्रष्टि से, मस्तक से, हाथो से मैं इष्ट देवी सभी को वरदान दे रही हूँ

→ **पवित्र भवः**

■ **सभी भक्त आत्माओ की शुभ, मंगल मनोकामना परमात्मा मुझ आत्मा के द्वारा पूर्ण कर रहे है**

 सबको सिध्धि प्राप्त हो रही है

 और मैं आत्मा वापस अपने देह में प्रवेश करती हूँ